आरती

तूँ पार ब्रह्म परमेश्वर , तीन काल रछपाल।
नित पाऊँ शरनागती , सत चरन कँवल दयाल॥
तूँ नित पतत उद्धार है , पूरन प्रभ जगदीश।
मोह माया संकट हरो , दीजो ज्ञान सन्देश॥
नित ही तेरे चरन की , मन में रहे परीत।
तूँ दाता दातार है , पुरखोत्तम सुखरीत॥
पवन पानी बैसन्तर , धरती और आकाश।
सब को सरजनहार तूँ , आद पुरख अबनाश॥
घट घट व्यापक तूँ परमेश्वर , सरब जीयाँ आधार।
अनमत कूकर को राख लें , किरपा निद्ध करतार॥
काल करम जाये दूषना , खल बुद्धी हरो अज्ञान।
सत शरधा पाऊँ चरन की , अखण्ड प्रेम चित ध्यान॥
दीनानाथ दयाल तूँ , पल पल होत सहाये।
कीरत साचे नाम की , मन तन आये समाये॥
अन्तर का सब खेद हरो , दीजो सत विशवाश।
सरनागत हूँ मंधमती , घट अन्तर करो परकाश॥
अन्तरगत सिमरन करूँ , निरन्तर धरूँ ध्यान।
घट घट में दर्शन करूँ , आद पुरख भगवान॥
तूँ साचा साहब सरब परकाशी , शबद रूप अखण्ड।
गुनी मुनी उस्तत करें , तन मन पायें आनन्द॥
होवें दयाल तूँ सत परमेश्वर , देवें धीर आपार।
निमख निमख सिमरन करूँ , चित चरन रहे आधार॥

काया अन्तर परतख होवें , नाद रूप बिसमाद।
पल पल कीजूँ आरती , तन मन तजूँ व्याध॥
जग आवन सुफला होवे , तेरी आज्ञा मन में ध्याऊँ।
अन्तरगत करूँ आरती , भव दुस्तर तर जाऊँ॥
अन्धमत मूढ़ा नित प्रती , तेरे चरनी करे पुकार।
'मंगत' माँगे दीनता , सत धरम सुख सार॥

समता मंगल

समता धरम हिरदे रसे , बिख ममता होवे नाश।
सत सरूप परमातमा , जल थल पाऊँ परकाश॥
सब जीवों से प्रेम हो , तन मन सेवा धार।
समता साधन पाये के , नित परसाँ जै जैकार॥
सत करम सत निश्चय , निर्मल पाऊँ विचार।
'मंगत' समता धार के , जीत चलो संसार॥